

डॉ. जॉर्ज पेटन, बाइबल अनुवाद, सत्र 17, अनुवाद चरणों की समीक्षा

© 2025 जॉर्ज पेटन और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. जॉर्ज पेटन और बाइबल अनुवाद पर उनकी शिक्षा है। यह सत्र 17 है, अनुवाद चरणों की समीक्षा।

इस वार्ता में, हम अनुवाद प्रक्रिया, अनुवाद चरणों और अनुवाद करते समय आपके द्वारा अनुभव की जाने वाली चीज़ों की समीक्षा करेंगे।

इससे पहले, हमने अनुवाद के मुद्दों और संक्रमण के सर्वोत्तम तरीकों की समीक्षा की थी। अब, हम इस प्रक्रिया से गुज़रने जा रहे हैं और पिछले व्याख्यानों में हमने जिन चीज़ों के बारे में बात की थी, उनमें से कुछ को दोहराएँगे और उन पर फिर से ज़ोर देंगे ताकि वे हमें फिर से तरोताज़ा कर सकें और हमें इस व्याख्यान के बाद आने वाले विषयों के लिए तैयार कर सकें। ठीक है, तो जब आप अनुवाद करते हैं, तो पूरी प्रक्रिया स्रोत पाठ, यानी बाइबिल के पाठ, और इसकी सभी सांस्कृतिक बारीकियों, इसके सभी अर्थपूर्ण अर्थ, इस्तेमाल की जाने वाली भाषा और व्यावहारिक निहितार्थों को समझने से शुरू होती है।

हमें गुणवत्तापूर्ण अनुवाद करने के लिए बाइबल के पाठों की उचित व्याख्या करनी होगी। यदि आपके पास गुणवत्तापूर्ण व्याख्या नहीं है, तो आप गुणवत्तापूर्ण अनुवाद नहीं कर पाएँगे। यह सटीक नहीं होगा, यह मूल पाठ के प्रति वफादार नहीं होगा।

और हम जो नहीं समझते उसका अनुवाद नहीं कर सकते। और इसलिए, काम है, बस ग्रीक में जाओ। ग्रीक क्या कहता है? खैर, यही आंशिक रूप से उत्तर है।

या फिर हम सिर्फ़ टीकाएँ पढ़ेंगे, और वे आपको बताएँगे कि इसका क्या मतलब है। जब मैं उत्पत्ति की पुस्तक का अनुवाद कर रहा था, तो मुझे जो समस्या आई, वह यह थी कि टीकाकार ने कुछ ऐसी चीज़ों के बारे में बात नहीं की, जिनसे मैं जूझ रहा था, जैसे कि आप इस विशेष वाक्यांश को क्रम में कैसे प्रस्तुत करेंगे? खैर, समस्या क्या है? खैर, समस्या यह है कि एक व्याकरण संबंधी समस्या है जो मुझे ऐसा करने से रोकती है। खैर, टीकाकार इस बारे में बात नहीं करते।

ठीक है। इसलिए, हमें यह जानकर खुशी हुई कि बाइबल अनुवाद संगठनों ने सहायता अध्ययन मार्गदर्शिकाएँ और अन्य अनुवाद साहित्य सामग्री विकसित की है जो विशेष रूप से अनुवादकों को संचार में इन अंतरालों, इन विभिन्न अनुवाद कठिनाइयों, और फिर पाठ के आसपास काम करने के तरीके पर सुझाव देने के लिए डिज़ाइन की गई हैं। इसलिए दोनों टिप्पणियों, ग्रीक और हिब्रू का ज्ञान होना आवश्यक है, और अनुवाद पाठ को प्रभावी ढंग से व्याख्या करने और पाठ को प्रभावी ढंग से संप्रेषित करने में मदद करता है।

लेकिन आप वह अनुवाद नहीं कर सकते जो आप नहीं समझते। इसलिए, बाइबल को समझने में सबसे बड़ी चुनौती यह समझना है कि क्या कहा गया था लेकिन क्या नहीं कहा गया। यह समझना है कि लेखक ने क्या सोचा था कि उसके श्रोता समझ जाएंगे, लेकिन उसे यह कहने की ज़रूरत नहीं थी, क्योंकि हमने इस गूढ़ संचार सिद्धांत के बारे में बात की थी।

संक्षेप में, हमारा लक्ष्य संचार में इन अंतरालों को समझना है। समस्या यह है कि अगर हम अंतरालों को नहीं देखते हैं तो हम अंतरालों को नहीं समझ सकते हैं। अगर आपको एहसास नहीं है कि अंतराल है, तो आप इसे अनदेखा कर देंगे और यह नहीं समझ पाएंगे कि यह संदेश का संचार नहीं करता है।

एक बार मेरे एक सहकर्मी ने मुझसे पूछा कि मैं ऐसी चीज़ कैसे देख सकता हूँ जो वहाँ नहीं थी। यह वाकई एक अच्छा सवाल है। आप कैसे पता लगा सकते हैं कि लेखक का मतलब वास्तव में पेज पर लिखी बात से अलग था? उदाहरण के लिए, अगर मेरी पत्नी, मेरे बच्चे और मैं खाने की मेज़ पर बैठे हैं और वे कहते हैं कि मेज़ पर नमक नहीं है, तो यह एक तथ्य है। आपका बहुत-बहुत धन्यवाद।

जी, पापा, आप बहुत समझदार हैं। मेरा क्या मतलब है? किसी को उठकर नमक लाना चाहिए। या, प्रिय, क्या आप नमक लाने जा सकते हैं या मेरे बच्चों में से कोई एक?

या अगर मैं अपनी पत्नी से सुबह काम पर जाने से ठीक पहले कहता हूँ, प्रिये, हमारे पास दूध खत्म हो गया है। और वह कहती है, मैं घर लौटते समय दुकान से होकर जाऊँगी। मैंने उससे क्या कहा? क्या तुम दुकान से थोड़ा दूध ले आओगी? उसने दूध नहीं कहा।

उसने कहा कि मैं घर लौटते समय दुकान से होकर जाऊँगी। लेकिन वह संचार जुड़ा हुआ था, और यह सिर्फ हमारे कहे गए शब्दों से कहीं आगे बढ़कर हमारे मतलब से भी आगे जाता है। और यही वह है जो हम करने की कोशिश करते हैं: हम उस पाठ के पीछे की जानकारी तक कैसे पहुँचें जो स्पष्ट नहीं है? हम इन अंतरालों तक कैसे पहुँचें? क्षमा करें, यह पाँच W और एक H होना चाहिए। मैं अपनी स्लाइड में इसे ठीक कर दूँगा।

पाँच डब्ल्यू और एक एच। आप पाठ के बारे में प्रश्न पूछकर शुरू करते हैं। तो, पाठ को देखें, और हम खुद से पूछना शुरू करते हैं, क्या मैं इस पाठ को समझता हूँ? और इसलिए, हम क्या पूछते हैं? हम पूछते हैं, अच्छा, कौन? यह कार्य किसने किया? वे कौन हैं? याद रखें, हम उत्पत्ति 14:10 में उस समस्या में पड़ गए। वे टार के गड्ढों में गिर गए, और वे पहाड़ियों से बच निकले। वे उस विशेष अंश में कौन थे? अंश में व्यक्ति या लोगों को पूरे अंश में कैसे संदर्भित किया गया था? अफ्रीका में कुछ भाषाओं में हमने जो चीज़ें खोजी हैं उनमें से एक यह है कि जो व्यक्ति मुख्य पात्र है उसे वह या वह के रूप में संदर्भित किया जाता है।

यह सर्वनाम है, व्यक्ति का नाम नहीं, और यह नहीं कि वह पुरुष है या महिला या महिला। और हम इसे ध्यान का केंद्र कहते हैं। वीडियोग्राफी की बात करें तो यह वह है जिसमें कैमरा हमेशा चालू रहता है।

और यह संचार का दिव्य केंद्र था। और इसलिए, यीशु वह दिव्य केंद्र है। और कभी-कभी यह कहा जाएगा, वह आराधनालय में गया, और वह बैठ गया और उपदेश देना शुरू कर दिया।

और उन्होंने कहा, और यह सिर्फ वह, वह ही कहता है। और यह मान लिया गया है, शायद, कि ग्रीक इन अफ्रीकी भाषाओं की तरह है, कि सबसे महत्वपूर्ण व्यक्ति माना जाता है। इसलिए, आपको इसे स्पष्ट रूप से उल्लेख करने की आवश्यकता नहीं है।

अब, इस अफ्रीकी संदर्भ में, हमने स्थानीय कहानियों का अध्ययन किया, व्यक्तिगत विवरण और लोककथाएँ दोनों। और विशेष रूप से लोककथाओं में, हमने पाया कि इस एक लोककथा में, एक कुत्ता और एक बिल्ली और एक चूहा था। चूहा सबसे कम महत्वपूर्ण पात्र है जिसका उल्लेख किया गया है; कहानी के तीन-चौथाई भाग में, चूहे का उल्लेख किया गया है।

और हर बार जब चूहे ने कुछ किया या उसका ज़िक्र किया गया, तो उसने कहा कि चूहे ने यह किया, चूहे ने यह किया, यह नहीं किया। मैंने सबसे कम महत्वपूर्ण किरदार का ज़िक्र किया। ठीक है।

ठीक है। तो, अगर आप अनुवाद कर रहे हैं, और आप कहते हैं, ठीक है, हमने उल्लेख किया कि यीशु ने यह किया, और यीशु ने वह किया, तो हम इस दूसरी अफ्रीकी भाषा में क्या कर रहे हैं? हम यीशु को एक छोटे पात्र में बदल रहे हैं। तो, ध्यान में रखने वाली बात यह है कि इन प्रतिभागियों का उल्लेख बाइबिल के पाठ में कैसे किया गया है, और चार्टर्ड भाषा के पाठ में उनका उल्लेख कैसे किया जाना चाहिए। ठीक है।

क्या हुआ? लेखक किस बारे में बात कर रहा है? उसका क्या मतलब था? तो, मैंने खुद से पूछा, लेखक किस बारे में बात कर रहा है? और उसका क्या मतलब था? पॉल द्वारा लिखे गए पत्रों में मैंने जो भी श्लोक पढ़े, उनमें पॉल बहुत सघन है। मेरा मतलब है, उसका लेखन बहुत सघन और बहुत भारी है। इस हद तक कि 1 पतरस में, प्रेरित पतरस ने कहा, आप जानते हैं, पॉल के लेखन को समझना कठिन हो सकता है।

यदि यह पीटर के लिए कठिन था, जो एक मूल यूनानी वक्ता है, तो हमारे लिए क्या? ठीक है। ठीक है। तो, लेखक का क्या मतलब था? अब, यह कहाँ हो रहा है? और यह कब हुआ? इसलिए, हम ये प्रश्न पूछते हैं ताकि यह पता चल सके कि क्या हमें उस सेटिंग के बारे में कम से कम कुछ सामान्य जानकारी है जहाँ यह हुआ। वे कहाँ थे? दिन का कौन सा समय था? ये सभी मुद्दे हमें यह समझने में मदद कर सकते हैं कि पाठ में क्या चल रहा है।

फिर से, हमें संदर्भ के किसी ढाँचे, किसी तरह के अवलोकन, या किसी तरह की मानसिक तस्वीर की ज़रूरत होती है ताकि हम जो पढ़ रहे हैं उसका अर्थ समझ सकें। और अगर यह हमारे लिए कठिन है, तो यह हमारे अनुवादों को पढ़ने वाले हमारे लोगों के लिए भी कठिन होगा। इसलिए, हमें अनुवाद करने से पहले ही खुद से ये सवाल पूछने होंगे।

हमें अपने मन में ये सवाल रखने की ज़रूरत है ताकि हम पाठ को समझ सकें और फिर उसे दूसरी भाषा में स्थानांतरित करने का कदम उठा सकें। लेखक ने ऐसा क्यों कहा या ऐसा क्यों

कहा? व्यक्ति ने ऐसा क्यों किया? या व्यक्ति ने ऐसा क्यों किया? और फिर, यह कैसे हुआ? ठीक है। तो, हम खुद से इस तरह के सवाल पूछना शुरू करते हैं।

हमारे पास उदाहरण होंगे, इसलिए जब हम उदाहरण देखेंगे तो यह सब एक साथ आएगा, लेकिन मैं हमें पाठ के बारे में इस तरह से सोचना शुरू करने के लिए प्रेरित करने की कोशिश कर रहा हूँ कि यह हमारी धारणा से परे हो ताकि आप सतह पर जो हम जानते हैं उससे ज़्यादा देखना शुरू कर सकें। ठीक है। इसलिए, हम उन प्रकार के प्रश्नों का उत्तर नहीं दे सकते।

हो सकता है कि कुछ छूट गया हो। आप ये सवाल पूछते हैं और कहते हैं, मुझे नहीं पता। यह स्पष्ट नहीं है।

फिर हमें एहसास होता है कि हमारे पास कोई समस्या है। और अगर हमारे पास कोई समस्या है, तो इसका मतलब है कि संचार में कोई कमी है। ठीक है।

तो, फिर से, हमें सिर्फ यह मानने के बजाय कि पाठ में ऐसा ही लिखा है, गहराई से जानने की ज़रूरत है। पाठ में जो लिखा है, वह स्पष्ट है। और फिर आप ये सवाल पूछना शुरू करते हैं, और फिर आपको एहसास होता है कि वाह, यह उतना स्पष्ट नहीं है जितना मैंने सोचा था।

ठीक है। तो, यह निहित जानकारी, ये अंतराल, शायद द्विभाषी अनुवाद में सबसे आम कठिनाई है। और ऐसा क्यों है? क्योंकि अनुवाद संचार है, और संचार गूढ़ है।

ठीक है। उसके बाद हम क्या करते हैं? हम पहचानते हैं कि यह किस तरह का अंतर है। और इसलिए, क्या यह एक अलंकार, मुहावरा, रूपक, तुलना, या इनमें से कुछ और है? क्या यह एक भाषाई कठिनाई है क्योंकि उन्हें इसे एक भाषा में कहने का तरीका है? क्या यह उस तरीके से फिट बैठता है जिस तरह से वे इसे दूसरी भाषा में कहते हैं? उदाहरण के लिए, जितना हम अंग्रेजी में कहेंगे, उससे कम।

हम नहीं समझते कि हिब्रू या ग्रीक भाषा का उच्चारण कैसे किया जाता है। इसलिए, ये भाषाई कठिनाइयाँ यहाँ की समस्याओं में से एक हो सकती हैं। हमें उन सांस्कृतिक मान्यताओं को समझना होगा जो पाठक ने सोचा था कि उनके लेखक समझ जाएँगे या जिन्हें पाठ में वक्ता समझ जाएगा यदि कोई संवाद चल रहा है। पाठ में वक्ता ने क्या मान लिया कि लोगों ने क्या समझ लिया? क्या आपको यीशु की कहानी और दाख की बारी का दृष्टांत याद है, और दाख की बारी का मालिक वहाँ नहीं था?

उसने इसे किराए पर दे दिया, उसने इसे काश्तकारों को दे दिया, जिन्होंने फिर इस पर खेती की, और फिर उसने अपने लोगों को भेजा कि वे जाकर उससे उपज लें और उस संघर्ष से पैसे कमाएँ। और उन्होंने कुछ लोगों को पीटा, और उन्होंने दूसरों को मार डाला, उन्हें नंगा करके ले गए, और उसे छिपा दिया, और फिर उसने कहा, हे बेटे, मेरे बेटे, और फिर अपने बेटे को भेजते हुए उन्होंने कहा, अगर हम बेटे को मार देते हैं, तो हम खेत पर कब्जा नहीं करेंगे, है न? उस अंश के अंत में, यह कहा गया है कि फरीसी और अन्य नेता जानते थे कि यीशु उन पर उंगली उठा रहे थे, और वे इस पर गुस्सा हो गए। उन्हें यह कैसे पता चला? यीशु उन पर उंगली उठाना चाहते थे,

और वे जानते थे कि उंगली उन पर उठाई जा रही है, और अंदाज़ा लगाइए और क्या? भीड़ में बाकी सभी लोग भी यह जानते थे।

वह उन्हें बुला रहा था। आखिर वह संचार कैसे हुआ? यह उस संस्कृति में उनके संवाद करने के तरीके के कारण हुआ, एक ऐसी शैली में जो उनके लिए अद्वितीय है, जिसे हम बाहर से देखने पर कहते हैं, मुझे समझ में नहीं आता। उन्हें यह विचार कहाँ से मिला? ठीक है, सांस्कृतिक मान्यताएँ और भाषा का उपयोग, और वह सारा साझा ज्ञान जिसके बारे में हमने बात की, इतिहास, विश्वास, विश्वदृष्टि, धार्मिक प्रथाएँ, परिस्थितिजन्य अपेक्षाएँ, यह सब उस तरह के मुद्दे में समाहित है जिससे हम निपट रहे हैं, और उसके बाद हम क्या करते हैं? फिर हम अंश पर शोध करते हैं और सभी संसाधनों का उपयोग करते हैं, जिसमें टिप्पणियाँ, अन्य बाइबिल शब्दकोश, अनुवाद सहायता और जो कुछ भी हम कर सकते हैं, शामिल हैं। हम अंश को समझने के लिए इसका उपयोग करते हैं, और कभी-कभी, हम कई अलग-अलग संस्करणों का उपयोग करेंगे, इसलिए यदि आप IV पढ़ते हैं, तो आपको एक अनुवाद मिलेगा।

यदि आप NLT पढ़ते हैं, तो आपको एक और अनुवाद मिलेगा। यदि आप ASV पढ़ते हैं, तो आपको एक और अनुवाद मिलेगा, और कभी-कभी अनुवाद पूरी तरह से अलग नहीं होते हैं, लेकिन वे कुछ चीजों को अधिक स्पष्ट या अधिक स्पष्ट बनाते हैं, और फिर आप सोचते हैं, ओह वाह, क्या इसका वास्तव में यही अर्थ है? फिर आप इसे कमेंट्री में देखते हैं, और आपको कुछ समर्थन मिलता है, हाँ, यही उस संदेश का अर्थ है, इसलिए हमारे संसाधनों में चीजों को देखना वह जगह है जहाँ हम शुरू करते हैं, जिसमें बाइबिल का इतिहास और कई अन्य चीजें शामिल हैं, इसलिए उनमें से एक चीज शब्द है, और इस विशेष संदर्भ में शब्द का क्या अर्थ है, और हमने अपने कुछ प्रश्नोत्तर गीतों में उस मुद्दे से निपटा है, और याद रखें, एक शब्द का कोई अर्थ नहीं होता है। विशेष रूप से दिए गए संदर्भ में भाषा में इस शब्द के साथ एक जुड़ाव है।

शब्दों का अर्थ हमेशा संदर्भ-विशिष्ट होता है। फिर वह संदर्भ क्या दर्शाता है? उस विशेष वाक्य में और उस विशेष सामाजिक संदर्भ में क्या अर्थ निकलता है, ये दोनों ही बहुत महत्वपूर्ण हैं। ठीक है, दूसरी बात, व्याकरण।

यह वाक्य संरचना हमें क्या बताती है? कोलोकेशन क्या हैं, या कोलोकेशन ऐसे शब्द हैं जो सह-घटित होते हैं या अन्य शब्दों की तरह एक ही स्थान, सह-स्थान पर होते हैं, और हमारे पास पिछले व्याख्यान में उनके उदाहरण हैं, इसलिए यदि आप कहते हैं कि उसने अपनी प्रेमिका को अंगूठी दी, तो हम जानते हैं कि यह एक विवाह प्रस्ताव है। उसने अपनी मंगेतर को अंगूठी दी; आप जानते हैं कि वे पहले से ही सगाई कर चुके हैं, इसलिए केवल मंगेतर बनाम प्रेमिका शब्द हमें स्थितियों के लिए दो अलग-अलग अर्थ देता है। ठीक है, तो यह सब शब्दों के व्याकरण में है।

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि: वे अपने अतीत के बारे में क्या जानते हैं जो हम नहीं जानते? सांस्कृतिक जानकारी नहीं बताई जा रही है या स्पष्ट नहीं की जा रही है। परिदृश्य मुझे क्या बता सकता है? पाठ से दूर जाने की कोशिश में समग्र सेटिंग क्या है, और जैसे कि आप एक हेलीकॉप्टर में हैं और नीचे के दृश्य को देख रहे हैं, और आप खुद को यह बताने की कोशिश करते हैं कि यहाँ क्या हो रहा है, और जो मैं देख रहा हूँ, वह मुझे पाठ के उन हिस्सों को समझने में कैसे मदद कर सकता

है जो शायद स्पष्ट नहीं हैं। आप जानते हैं, हमने ऐसा तब किया जब हमने उत्पत्ति 14 के उस अंश को देखा, जहाँ हमने राजाओं के राजाओं से लड़ने के पूरे मुद्दे को कहा, और जैसे कि राजा राजाओं से लड़ते हैं, या सेनाएँ सेनाओं से लड़ती हैं, और हमने परिदृश्य में कहा, यह स्पष्ट है कि यह सेनाओं का एक समूह है जो एक साथ लड़ रहा है, और इसलिए यह हमें श्लोक 10 में सर्वनामों में से एक का अर्थ निर्धारित करने में मदद करता है।

तो, वह परिदृश्य हमें क्या बताता है? ठीक है, और बस याद रखें, हम परिदृश्य का अनुवाद कर रहे हैं। हम शब्दों का अनुवाद नहीं कर रहे हैं, हम वाक्यों का अनुवाद नहीं कर रहे हैं, हम केवल पैराग्राफ का अनुवाद नहीं कर रहे हैं, हम पूरे दृश्य का अनुवाद कर रहे हैं, और पाठक को बाइबिल के पाठ में क्या चल रहा है, इसकी एक तस्वीर बनाने में मदद करने की कोशिश कर रहे हैं। अब, यह हमेशा आसान नहीं होता है अगर हम सीधे-सीधे अनुवाद करें ताकि हमें कला भाषा में प्रतिबिंबित सभी शब्द मिलें, साथ ही साथ भाषा भी शब्दों के रूप में।

ठीक है, और इसलिए अब मैं कुछ उदाहरणों के माध्यम से जाना चाहता हूँ, और हम फिर से जाने वाले हैं। यह अंश उत्पत्ति 14 है, और हम पहले 1 से 12 तक पढ़ने जा रहे हैं, और फिर मैं वापस आऊंगा, और हम कुछ मुख्य बिंदुओं पर चर्चा करेंगे। ठीक है।

और यह शिनार के राजा अम्राफेल, एल्लासार के राजा अर्योक, एलाम के राजा कदोर्लाओमेर, गोईम के राजा तिदाल के दिनों में हुआ, कि उन्होंने सदोम के राजा बेरा, और गोमोरा के राजा बिर्शा, और अदामा के राजा शिनाब, सबोईम के राजा शेम्बर और बेला (जो कि सोहर है) के राजा के साथ

युद्ध किया। ये सभी सहयोगी सिद्धीम की घाटी (जो कि खारे समुद्र है) में सहयोगी के रूप में आए। 12 वर्षों तक, उन्होंने कदोर्लाओमेर की सेवा की, लेकिन तेरहवें वर्ष में उन्होंने विद्रोह कर दिया। चौदहवें वर्ष में कदोर्लाओमेर और उसके साथ के राजाओं ने आकर अशतरोत-करनैम में रपाइयों को, हाम में जूजीम को, शावेकियर्यतैम में एमीम को, और सेईर पहाड़ में होरियों को, और जंगल के पास के एल-पारान तक, जो जंगल के पास है, मार डाला। फिर वे लौटकर एन-मिशपात (जो कादेश भी कहलाता है) को आए, और अमालेकियों के सारे देश को, और हसासोन-तामार में रहनेवाले एमोरियों को भी जीत लिया।

तब सदोम के राजा, अमोरा के राजा, अदमा के राजा, सबोईम के राजा और बेला (जो सोहर भी कहलाता है) के राजा बाहर आए और सिद्धीम की घाटी में उनके विरुद्ध युद्ध के लिए पाँति बाँधी, अर्थात् एलाम के राजा कदोर्लाओमेर, गोईम के राजा तिदाल, शिनार के राजा अम्राफेल और एल्लासार के राजा अर्योक के विरुद्ध, चार राजाओं ने पाँच राजाओं के विरुद्ध युद्ध किया। अब सिद्धीम की घाटी कालीनों से भरी हुई थी, और सरन और अमोरा के राजा भाग गए, और वे उनमें गिर गए, लेकिन जो बच गए वे पहाड़ी इलाके में भाग गए। तब उन्होंने सदोम और अमोरा का सारा माल और उनकी सारी खाद्य आपूर्ति लूट ली और चले गए।

और उन्होंने अब्राहम के भतीजे लूत और उसकी संपत्ति को भी ले लिया और चले गए, क्योंकि वह सदोम में रहता था।

ठीक है, यह पूरा अंश है। हम वापस जाना चाहते हैं और कुछ अन्य अनुवाद चुनौतियों और अनुवाद कठिनाइयों पर चर्चा करना चाहते हैं क्योंकि संचार में कुछ अंतराल हैं जिन्हें हमने अनदेखा कर दिया है।

अगर हम इसका अनुवाद करें, तो हम शायद शब्द-दर-शब्द अनुवाद कर सकते हैं, और यह स्पष्ट प्रतीत होता है। लेकिन इसमें और भी बहुत कुछ है जो संभावित रूप से अस्पष्ट हो सकता है, हालांकि मुझे ऐसा नहीं लगता। आइए वापस जाएं और फिर से देखें।

हम पहले सात आयतों पर फिर से विचार करना चाहते हैं और फिर पाठ के बारे में बात करते हैं। इसलिए, जब मैं इसके बारे में बात करता हूँ, तो आप नोट्स बना सकते हैं। और यह इन दिनों में हुआ, शिनार के राजा अम्राफेल के दिनों में, आदि, उन्होंने सदोम के राजा बेरा के साथ युद्ध किया।

सिडिम घाटी के सहयोगी, यानी नमक सागर। ठीक है, वे लड़ने के लिए तैयार हो रहे हैं। यह बिल्कुल श्लोक 8 और 9 जैसा लगता है, है न? हाँ, लगभग शब्द-दर-शब्द।

तो, क्या वे दो बार लड़े? पिछले सेमेस्टर में मैंने कक्षा में एक चर्चा की थी, और छात्रों में से एक ने कहा कि ऐसा लगता है कि वे दो बार लड़े। क्या हो रहा है? तो यह हमारा पहला सवाल है: वे कितनी बार लड़े? क्या वे एक बार या दो बार लड़े? इस सवाल का जवाब देने के लिए, हमें हिब्रू साहित्यिक संरचना को समझने की ज़रूरत है। हिब्रू साहित्यिक संरचना अक्सर एक सामान्य कथन देती है और फिर बाद में वापस आकर विवरण भर देती है।

दरअसल, अगले ही श्लोक में वे विवरण भरना शुरू कर देते हैं। जैसे क्या? जैसे कि शुरुआत में, परमेश्वर ने आकाश और पृथ्वी का निर्माण किया। और फिर यह क्या कहता है? और परमेश्वर के ऐसा करने से पहले पृथ्वी ऐसी ही थी।

तो यह शुरुआत हमें बता रही है कि यह एक नया प्रकरण है। हमें यह हर जगह मिलता है। उत्पत्ति में, याकूब अपने चाचा लाबान के साथ रह रहा था, और उसने लाबान की दो बेटियों से विवाह किया।

और फिर उसे लगा कि परमेश्वर उसे छोड़ने के लिए ले जा रहा है। ऐसा कहा गया, और फिर याकूब अपनी पत्नी और बच्चों के साथ चला गया। और उसने अपनी पत्नियों को ऊँटों पर बिठाया, और उसने अपने सेवकों को पशुधन इकट्ठा करने के लिए कहा, और उसने अपने बच्चों को ऊँटों पर बिठाया।

जब उन्होंने सब कुछ तैयार कर लिया, तो वे रात में बाहर चले गए, जबकि लाबान बाहर था। वे कितनी बार बाहर गए? एक बार। यह आरंभिक पद इस नए छोटे प्रकरण की ओर ले जाता है।

मुझे याद है कि रूथ के पहले अध्याय में लिखा है, अब नाओमी ने सुना कि प्रभु ने अपने लोगों पर कृपा की है और उन्हें बेथलेहम में भोजन दिया है। इसलिए, वह घर वापस जाने के लिए निकल

पड़ी। और फिर उसने अपनी बहुओं को इकट्ठा किया, और फिर वह उनसे कह रही थी, मैं घर वापस जा रही हूँ।

रुको, श्लोक में पहले से ही लिखा है कि वह चली गई, है न? आप NIV पढ़ें। दिलचस्प बात यह है कि NIV में लिखा है कि वह घर जाने के लिए तैयार है। क्यों? क्योंकि यह कहानी की शुरुआत है। इसका मतलब कालानुक्रमिक होना नहीं है।

इसका मतलब शाब्दिक होना है। नंबर दो, क्या श्लोक तीन और चार कालानुक्रमिक रूप से आते हैं? जवाब है नहीं, ऐसा नहीं है। यह एक और संकेत है कि श्लोक एक, दो और तीन इस प्रस्तावना हैं, यह परिचय है कि अब हमें क्या बताया जाएगा।

तो दो बातें हैं जो हमें जानने की ज़रूरत है। एक यह कि हिब्रू ऐसा करता है। और दूसरी, वे ऐसा कैसे करते हैं? वे इस परिचयात्मक अंश के बाद आपको पृष्ठभूमि की कहानी बताकर ऐसा करते हैं।

और हम यह जानते हैं क्योंकि यह कालानुक्रमिक नहीं है। क्योंकि आप श्लोक तीन, फिर श्लोक चार और फिर श्लोक पाँच नहीं पढ़ सकते। तो, तीन और चार के बीच एक अंतराल है, है न? इसे श्लोक चार से शुरू करें।

बारह साल तक वे केद्रोन बार की सेवा करते रहे, लेकिन तेरहवें साल में उन्होंने विद्रोह कर दिया। यहाँ विद्रोह का क्या मतलब है? फिर से, यह एक शब्द है। और आपको उस शब्द, विद्रोह, का दूसरी भाषा में अनुवाद करना चाहिए।

विद्रोही के लिए एक शब्द है। हाँ। उनका विद्रोह कैसा था? उसका क्या मतलब था? खैर, इसके लिए प्राचीन पूर्वी दुनिया की समझ की आवश्यकता है।

और जहाँ आपके पास ऐसे राजा हैं जो फिर दूसरे देशों पर कब्ज़ा कर लेते हैं, और वे वहाँ रहते नहीं हैं। वे उन देशों पर कब्ज़ा नहीं करते जैसे बेबीलोन ने किया था जब वे आए और इसराइल को नष्ट कर दिया, और उन्होंने उन पर कब्ज़ा कर लिया, और लोगों को निर्वासित कर दिया, और वह सब कुछ। इस मामले में, यहाँ तक कि दाऊद ने भी ऐसा किया था, और बेबीलोन के आने और उन्हें मिटा देने से पहले इसराइल ने उनके साथ ऐसा किया था, लेकिन उनके पास जागीरदार राजा हैं जो फिर उस राजा को श्रद्धांजलि देते हैं जो वहाँ पर है।

और मेरा मानना है कि राजा हर साल उनसे पैसे वसूलने के लिए किसी को भेजते थे, जैसे कर, ठीक है? मैं यहाँ वह पैसा वसूलने आया हूँ जो आप हमें देना चाहते हैं। हमारे पास ऐसा है, जहाँ पुराने नियम में, उन्होंने उस वर्ष एक निश्चित नेता को श्रद्धांजलि देने से इनकार कर दिया, ठीक है? तो, यह श्रद्धांजलि देना और उस श्रद्धांजलि को देने से इनकार करना है। विद्रोह करने का यही मतलब है क्योंकि यह कहता है कि 12 साल तक उन्होंने श्रद्धांजलि दी, 13वें साल उन्होंने मना कर दिया, और फिर श्लोक 5 में, 14वें साल में, राजाओं ने अपनी सेनाओं के साथ आगे बढ़ना शुरू कर दिया, ठीक है? तो, यह हमें प्राचीन पूर्व के संदर्भ, जागीरदार राजाओं की संस्कृति और

श्रद्धांजलि देने की पूरी बात को समझने के लिए ले जाता है। एक शब्द को समझना एक राजा के लिए काफी है।

अब हमें तस्वीर समझ में आ रही है। फिर से, हम अपने हेलीकॉप्टर में एक हज़ार फ़ीट की ऊँचाई पर हैं, और हम यह सब होते हुए देख रहे हैं, है न? और हम परिदृश्य बनाते हैं, और हम ये मुख्य प्रश्न पूछते हैं, ऐसे प्रश्न जिनका उत्तर आपने कमेंट्री में नहीं दिया होगा। क्या आपको उत्तर मिल सकते हैं? हाँ, लेकिन हमें काम करना होगा।

ठीक है, तो 14वें वर्ष में, वे आए और राफेल को हराया, आदि, आदि, आदि। तो हमारे सवाल में से एक था, यह कहाँ हुआ? वे कहाँ से आए थे? और ये विशेष लोग कहाँ रह रहे थे? तो, अगर आप इज़राइल के बारे में सोचते हैं, तो यह एक लंबा, पतला देश है जो पूर्व में जॉर्डन नदी से घिरा हुआ है। तो, यह ट्रांसजॉर्डन है जहाँ से ये लोग आए, ये चार राजा।

और वे आए, और उन्होंने सीमा पार की, और उन्होंने अन्य कनानी जनजातियों पर हमला करना शुरू कर दिया जो आज के इसराइल के दक्षिणी क्षेत्र में थे। और हम जानते हैं कि ये लोग कहाँ रहते थे। हम ऐसी टिप्पणियाँ पा सकते हैं जो हमें बताती हैं कि रफ़ाईम कहाँ रहते थे, जूज़िम कहाँ रहते थे, आदि।

और हम इसे मानचित्रों पर पा सकते हैं, और वे कह सकते हैं कि यह लगभग वही जगह है जहाँ वे रहते थे। तो, हम अपने मन में एक तस्वीर बना सकते हैं: ये राजा आए, और उन्होंने लोगों के इन छोटे समूहों पर हमला किया। हम नहीं जानते कि ये समूह कितने बड़े थे।

वे शायद बहुत बड़े नहीं थे। लेकिन किसी तरह, इन चार राजाओं के पास न केवल कब्जा करने के लिए बल्कि माल और लोगों को भी ले जाने के लिए पर्याप्त सैनिक थे। इसलिए, उनके पास अभी भी बड़ी संख्या में सैनिक थे, जो ऐसा करने के लिए पर्याप्त बड़े थे।

तो, हमें इस पूरी स्थिति की तस्वीर मिल रही है। तो, इन सवालों को पूछने से, क्या हमें जवाबों की तलाश करने के लिए प्रेरित किया गया? और मानो या न मानो, अगर आपको जवाब नहीं पता है, तो पहले जाकर देखें। मैं इस बारे में पूरी तरह गंभीर हूँ, ठीक है? अगर आपको बाइबल की आयत नहीं मिल रही है, तो उसे गूगल पर खोजें।

बाइबल की वह आयत कहाँ है जिसमें लिखा है कि तुम पृथ्वी के नमक हो? अगर आप अभी इसे गूगल करेंगे, तो आपको यह लगभग एक या आधे सेकंड में मिल जाएगी। तो, जानकारी वहाँ मौजूद है, लेकिन हमें वह जानकारी प्राप्त करने की आवश्यकता है ताकि हम समझ सकें कि क्या हो रहा है। फिर यह इस बात पर निर्भर करता है कि हम इस पूरी स्थिति को उन लोगों तक कैसे पहुँचाएँगे जिनके लिए हम दंड की प्रार्थना कर रहे हैं। तो आयत 8 में, सदोम का राजा, अमोरा का राजा, वगैरह, वगैरह, वगैरह, आयत 9 के विरुद्ध, चार राजाओं के विरुद्ध, पाँच के विरुद्ध।

और फिर हम पहले ही श्लोक 10 के बारे में बात कर चुके हैं। और सिद्धीम की घाटी तार के गड्ढों से भरी हुई थी, और सदोम और अमोरा के राजा भाग गए। और वे, यानी सदोम और अमोरा के

सैनिक, उनमें से कुछ इन गड्डों में गिर गए, और उनमें से कुछ पहाड़ियों पर भाग गए, ठीक है? और हमने देखा कि NIV जैसे संस्करणों में कहा गया है कि कुछ लोग गिर गए।

एनएलटी और ईएसवी कहते हैं कि कुछ लोग गिर गए। तो, इससे यह पता चलता है कि हम राजाओं के बारे में बात नहीं कर रहे हैं, बल्कि उन सेनाओं से संबंधित पुरुषों की संख्या के बारे में बात कर रहे हैं। और इसलिए यह सिर्फ कुछ या कुछ पुरुषों के शब्दों से और अधिक स्पष्ट हो जाता है।

श्लोक 11, फिर वे, वे कौन हैं? फिर उन्होंने सामान ले लिया। इसलिए, यदि आप श्लोक 10 पढ़ते हैं, तो अंतिम शब्दों का उल्लेख है कि जो बच गए, वे सामान चुराते हैं। नहीं।

पद 11 में वे कौन हैं? फिर से, सूचना प्रवाह और प्रतिभागियों की टैकिंग। यह वे दो राजा हैं, क्षमा करें, वे चार राजा जिन्होंने युद्ध जीता और उनकी सेनाएँ, सदोम और अमोरा से सामान और उनकी सारी खाद्य आपूर्ति ले ली, और फिर वे चले गए। और उन्होंने बहुत कुछ लिया, यहाँ तक कि कुछ भी नहीं।

यहाँ एक सवाल है। उन पाँचों में से राजा की सेनाओं में से कितने भाग गए? उनमें से कितने भाग गए? संभवतः, मुझे नहीं पता, और पाठ में ऐसा नहीं कहा गया है, लेकिन संभवतः सभी पाँच भाग गए। क्योंकि इस समूह ने इस समूह के विरुद्ध लड़ाई लड़ी, यह समूह जीत गया, और पूरा समूह भाग गया।

ठीक है। अगर सभी पाँच भाग गए, तो सदोम का उल्लेख क्यों किया गया, और गोमोरा का उल्लेख क्यों किया गया, और अन्य तीन का उल्लेख क्यों नहीं किया गया? साहित्यिक फोकस। उन अन्य तीन राजाओं के बारे में कोई फर्क नहीं पड़ता।

जो बात मायने रखती है वह है सदोम और अमोरा। क्यों? और यह अथक है। इसलिए, साहित्यिक ध्यान इन लोगों पर केंद्रित है और उन पर जूम करता है, सदोम और अमोरा। वे भाग गए और, भागने की प्रक्रिया में, अपने शहरों को असुरक्षित छोड़ गए।

और इसलिए, उन चारों की सेनाएँ आई और सारा सामान ले गई, आई और सारे लोगों को ले गई, और उसके साथ-साथ, उन्होंने बहुत कुछ ले लिया। और यह सब 12 श्लोकों में। यह बहुत कुछ है।

ठीक है। चलिए, चिंतित हो जाइए। क्षमा करें।

मैं बस इतना कहना चाहता हूँ, क्या इससे मदद मिलती है? क्या हम बेहतर तरीके से देख पाते हैं कि यहाँ क्या हो रहा है? क्या हम देखते हैं कि जब वे कहते हैं कि सदोम और अमोरा भाग गए, तो शायद सदोम और अमोरा के भाग जाने से ज़्यादा कुछ हुआ, लेकिन क्या यह उस कहानी को बताने के लिए ज़रूरी था जिसे वे चित्रित करने की कोशिश कर रहे थे, जो अब्राहम और लूत के बीच का रिश्ता था, और उसका सदोम में रहना, और सदोम को लूटा जाना? वह फ़ोकस साहित्यिक फ़ोकस है, वास्तविकता फ़ोकस नहीं। फिर से, आप उस बारे में बात करना चुनते हैं

जिसके बारे में आप बात करना चाहते हैं, लेकिन आपको हर चीज़ के बारे में बात करने की ज़रूरत नहीं है। ठीक है।

हम इन सवालों को पूछकर वहां पहुंचते हैं; एक बार जब हमें एहसास हो जाता है कि कोई समस्या है, तो हम समझते हैं कि यह किस तरह की समस्या है, जो हमें जवाब खोजने के लिए प्रेरित करती है। और हम जवाबों को कई अलग-अलग जगहों पर खोजते हैं। ठीक है।

आइए हम नए नियम पर जाएं, और हमारे पास देखने के लिए कुछ नए नियम के अंश हैं। इस अगले भाग में, हम मरकुस 9 के बारे में बात करने जा रहे हैं। तो चलिए हम अनुभाग दर अनुभाग पढ़ते हैं। मरकुस 9:9 से 13।

यह पहाड़ पर यीशु के रूपांतरण के प्रकरण के बाद है, जहाँ पतरस, याकूब और यूहन्ना उसके साथ हैं। और उसका रूपांतरण हो गया है, और वह एक चमकता हुआ टुकड़ा है, और वह मूसा और एलिय्याह से बात करता है। फिर, हम इसे श्लोक 9 में उठाते हैं। जब वे पहाड़ से नीचे आ रहे थे, तो उसने आदेश दिया कि जब तक मनुष्य का पुत्र मृतकों में से नहीं उठ जाता, तब तक वे किसी को भी यह न बताएँ कि उन्होंने क्या देखा है।

उन्होंने उस कथन पर विचार-विमर्श किया और एक दूसरे से चर्चा की कि मृतकों में से जी उठने का क्या अर्थ है। फिर उन्होंने उससे पूछा कि शास्त्री क्यों कहते हैं कि एलिय्याह को पहले आना चाहिए। और उसने उनसे कहा, एलिय्याह पहले आता है और सभी चीज़ों को पुनर्स्थापित करता है। और फिर भी, मनुष्य के पुत्र के बारे में यह कैसे लिखा गया है कि वह बहुत सी चीज़ें सहेगा और उसका अपमान किया जाएगा? लेकिन मैं तुमसे कहता हूँ, एलिय्याह वास्तव में आ चुका है, और उन्होंने उसके साथ जो कुछ भी करना चाहा, वैसा ही किया, जैसा उसके बारे में लिखा गया था।

ठीक है। हम ध्यान आकर्षित करना चाहते हैं। हम कई सवाल पूछ सकते हैं, लेकिन आइए इस बात पर ध्यान दें कि यह एलिय्याह कौन है। यीशु किसके बारे में बात कर रहे हैं? और हम कैसे जानते हैं? इसलिए, अगर हम मार्क 1 को पढ़ते हैं, तो मार्क 1 हमें जंगल में रोने वाली आवाज़ के बारे में बताता है।

यह यशायाह की भविष्यवाणी है। प्रभु का मार्ग बनाओ। और एलिय्याह का संदर्भ जंगल में सुनाई देने वाली आवाज़ है, और यह यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले के बारे में बात कर रहा है।

इसलिए, अगर हम एक और सुसमाचार का विवरण पढ़ें, तो हमें पूरी तस्वीर मिल जाती है। लेकिन और भी बहुत कुछ है। उनके पास एलिय्याह की, माफ़ कीजिए, उनके पास यीशु से 700 साल पहले यशायाह की भविष्यवाणियाँ थीं।

और यशायाह में मसीहाई भविष्यवाणियों में से बहुत सी ऐसी हैं जहाँ हमें मसीहा के बारे में ज़्यादातर जानकारी मिलती है। और यशायाह को देखते हुए, हर कोई मसीहा के आने की उम्मीद कर रहा था। और आखिरी भविष्यवक्ता, मलाकी, यीशु से लगभग 400 साल पहले रहता था।

और 400 साल तक सन्नाटा रहा। 400 साल, कोई पैगम्बर नहीं, कोई फरिश्ता नहीं, भगवान का कोई संदेश नहीं, कुछ भी नहीं। और वे कह रहे थे, यह मसीहा कब आने वाला है? इसलिए, हर कोई उत्साहित और तैयार था।

तो, यह पुराने नियम का एक संकेत है। इसलिए, इस अंश को समझने के लिए हमें पुराने नियम को समझने की ज़रूरत है। और इस अंश को समझने के लिए हमें यह समझने की ज़रूरत है कि एलिय्याह कौन था।

फिर से, यह ऐसी जानकारी है जिसे हम पाठ में नहीं डाल सकते हैं, लेकिन आइए इसे कहीं रख दें ताकि यह स्पष्ट हो सके कि यीशु क्या कह रहे थे। ठीक है। तो, इससे हमें यह समझने में मदद मिलती है कि यह किसके बारे में बात कर रहा है क्योंकि यह तुरंत स्पष्ट नहीं है।

यीशु बहुत ही लाक्षणिक रूप से बोलते हैं, कहते हैं कि एलिय्याह और यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाला एक ही व्यक्ति हैं। ठीक है। ठीक है।

आइए हम एक और अंश पर वापस जाएं, जो कि मार्क 9:14 से 19 तक का अंश है। वे तीन शिष्यों के पास वापस आए, और यीशु अन्य नौ शिष्यों के पास वापस आया, जो अज्ञात नहीं थे। और उन्होंने देखा कि उनके चारों ओर एक बड़ी भीड़ थी और कुछ शास्त्री उनके साथ बहस कर रहे थे।

जब भीड़ ने उसे देखा, तो वे चकित हो गए और उसे बधाई देने के लिए दौड़ पड़े। तब उसने पूछा, तू उनसे क्या बात कर रहा है? भीड़ में से एक ने उत्तर दिया, कि हे गुरु, मैं अपने बेटे को तेरे पास लाया हूँ, जिस में गुँगा आत्मा है। और जब वह उसे देखती है, तो भूमि पर गिर पड़ती है, और चिल्लाती है, और दाँत पीसती है, और अकड़ जाती है।

मैंने तुम्हारे चेलों से कहा था कि वे उसे बाहर निकाल दें, लेकिन वे ऐसा नहीं कर सके। और यीशु ने उनको उत्तर दिया और कहा, हे अविश्वासी पीढ़ी, मैं कब तक तुम्हारे साथ रहूँगा? मैं कब तक तुम्हारी सहूँगा? उसे मेरे पास लाओ। ठीक है।

तो, हम इस अंश के पहले भाग के माध्यम से प्रतिभागियों को ट्रैक करने जा रहे हैं। जब वे वापस आए, फिर से, अगर हम श्लोक 9 से 13 पढ़ते हैं, तो हमें यह विचार मिलता है कि यीशु पतरस, याकूब और यूहन्ना के साथ हैं। शिष्यों का मतलब दूसरे शिष्यों से है।

और इसलिए, एक बात जो हमें अपने अनुवाद में कहने की ज़रूरत है, दूसरी बात यह है कि शिष्य शिष्यों के पास आए। यह कुछ लोगों के लिए एक वियोग हो सकता है। उन्होंने देखा, किसने देखा? चार आदमी, यीशु और तीन।

उनके इर्द-गिर्द भीड़ थी, वे कौन थे? शायद नौ शिष्य। क्योंकि, फिर से, वे भीड़ के पास पहुँच रहे थे। वे यह सब होते हुए देख रहे थे।

फिर से, हम यीशु की नज़र से चीज़ें देख रहे हैं क्योंकि यीशु ध्यान का केंद्र है। आखिरकार, जब पूरी भीड़ ने उसे देखा, तो वे चकित हो गए और उसका अभिवादन करने के लिए उसके पास दौड़ पड़े। इसलिए, वे अभी इस बहस का हिस्सा नहीं हैं क्योंकि वे इसे देख रहे हैं, और वे इसके करीब पहुँच रहे हैं।

इसलिए, पद 16 में, उसने उनसे पूछा, तुम उनके साथ क्या चर्चा कर रहे हो? यहाँ एक प्रश्न है। फिर से, जब भी हमारे पास आप और वे और यह और वह जैसे सर्वनाम होते हैं, तो हम हमेशा उन्हें घेर लेते हैं, उन्हें लाल रंग से रेखांकित करते हैं, उनके चारों ओर सितारे लगाते हैं, और कहते हैं, खतरा, खतरा, खतरा, यहाँ परेशानी है। आप कौन हैं और वे कौन हैं? मैंने ऐसे उपदेश सुने हैं जिनमें अलग-अलग बातें कही गई हैं।

मैंने ऐसी टिप्पणियाँ पढ़ी हैं जिनमें अलग-अलग दृष्टिकोण हैं। एक उपदेश जो मैंने सुना था उसमें कहा गया था कि यीशु अपने शिष्यों से बात करते हुए पूछ रहे थे, तुम उनके साथ क्या चर्चा कर रहे हो? तुम इन लोगों के साथ बहस क्यों कर रहे हो? तुम्हें इन लोगों के साथ बहस नहीं करनी चाहिए। तुम क्या कर रहे हो? मुझे लगता है कि यह संभव है।

लेकिन अफ्रीका में लगभग 30 साल रहने के बाद, एक ऐसी संस्कृति में जहाँ सम्मान वास्तव में बहुत महत्वपूर्ण है, यहाँ तक कि उच्च पद वाले व्यक्ति से लेकर निम्न पद वाले व्यक्ति तक, आप कभी किसी को बुरा-भला नहीं कहेंगे। मैंने एक बार हमारे गाँव में एक स्थिति में ऐसा किया था। मेरी पत्नी ने कुछ किया था, और मैंने पूछा, तुमने ऐसा क्यों किया? खैर, यह कुछ अन्य महिलाओं के सामने था।

और मेरी पत्नी ने बाद में मुझसे कहा, तुम्हें उन महिलाओं के सामने मुझे नहीं बुलाना चाहिए था। तो, मैंने अपने एक पड़ोसी से कहा, हाँ, मेरी पत्नी ने कहा कि मुझे उसे नहीं बुलाना चाहिए था। और मेरे दोस्त ने कहा कि वह सही थी।

आप ऐसा मत करो। खुला मत करो। ठीक है।

तो, क्या यह संभव है कि वह अपने शिष्यों को दोषी ठहरा रहा था या उनकी आलोचना कर रहा था? मुझे लगता है कि यह संभव नहीं है क्योंकि मैं पूर्वी संस्कृतियों के संचालन के बारे में समझता हूँ। तो, आप उनके साथ क्या चर्चा कर रहे हैं? सवाल का जवाब कौन देता है? भीड़ में से कोई। तो यह हमें इस ओर ले जाता है कि शायद यह भीड़ में से कोई है जो सभी भीड़ का प्रतिनिधित्व करता है।

वे ही थे जिन्होंने शिष्यों के साथ चर्चा और बहस की थी। ठीक है। तो हम निश्चित रूप से जानते हैं।

क्या इससे कोई फ़र्क पड़ता है? हम जानते हैं कि वहाँ एक बहस हुई थी। हम जानते हैं कि वहाँ दो पक्ष थे। और हम जानते हैं कि कुछ बहस चल रही थी।

ठीक है। तो, फिर हम देखते हैं कि शिक्षक अपने बेटे को यीशु के पास ले जाता है। और फिर यीशु जवाब देते हैं, ओह, तुम एक अविश्वासी पीढ़ी हो।

इसलिए, हमें हमेशा पाठ में कुछ बदलने की ज़रूरत नहीं होती, लेकिन कम से कम हम इसे जितना हो सके उतना बेहतर ढंग से समझने की कोशिश तो करते ही हैं। ठीक है। जारी रखें।

आइए इसका पता लगाएँ। श्लोक 19. और उसने उत्तर दिया और उनसे कहा, अच्छा, हे अविश्वासी लोगो, मैं कब तक तुम्हारे साथ रहूँगा? मैं कब तक तुम्हारी सहूँगा? उसे मेरे पास लाओ।

और वे लड़के को उसके पास ले आए। जब उसने उसे देखा, तो तुरंत आत्मा ने उसे ऐंठन में डाल दिया, और वह ज़मीन पर गिर गया, इधर-उधर लोटने लगा और उसके मुँह से झाग निकलने लगा। उसने अपने पिता से पूछा कि उसके साथ ऐसा कब से हो रहा है। और उसने कहा, बचपन से।

उसे नाश करने के लिए अक्सर आग और पानी में फेंका जाता है। लेकिन अगर तुम कुछ कर सकते हो, तो हम पर दया करो और हमारी मदद करो। और यीशु ने उससे कहा, अगर तुम कर सकते हो, तो जो विश्वास करता है उसके लिए सब कुछ संभव है।

और तुरंत ही, लड़के के पिता ने चिल्लाकर कहा, मैं विश्वास करता हूँ। श्वेत अविश्वास की सहायता करें। ठीक है।

इसलिए, वे लड़के को आयत 14 में उसके पास ले आए। यह अविश्वासी पीढ़ी जिसका ज़िक्र आयत 19 में यीशु ने किया है, संभवतः पूरी भीड़ है। हम नहीं जानते।

यह निर्दिष्ट नहीं है, लेकिन हम इसके साथ रह सकते हैं। जब उसने उसे फिर से देखा, सर्वनाम, घंटियाँ बजीं, रोशनी चमकी, और उसने इसे लाल रंग से रेखांकित किया, लेकिन उसने यहाँ से शुरू किया, किसने किसे देखा? ग्रीक में, कोई कैपिटल नहीं है।

यह तो उसने ही देखा था। किसने किसे देखा? फिर से, अगर हम इसे देखें, तो नायक, जो परेशानी का कारण बन रहा है, वह दुष्ट आत्मा है जो लड़के में है।

और यह तर्क दिया जा सकता है कि वह आत्मा की ओर इशारा कर रहा है। या आत्मा ने यीशु को देखा। और यही वह दिशा है जिस ओर अधिकांश टिप्पणियाँ और बाइबल संस्करण जाते हैं।

तुरंत, वह आत्मा, फिर से, आत्मा न्यूमा है, जो मुझे लगता है, अगर मैं गलत नहीं हूँ, तो एक स्त्रीलिंग संज्ञा है। क्या यह सही है, टेड? नपुंसक। ठीक है।

नपुंसक बनाया जा सकता है। तो नपुंसक बनाना और वह एक साथ चल सकते हैं। ठीक है।

ठीक है। तो, आत्मा ने उसे ऐंठन में डाल दिया। संदर्भ से, हम जानते हैं कि उसने यीशु को ऐंठन या किसी और को नहीं डाला।

उसने लड़के को ऐंठन में डाल दिया, जैसा कि हमने सुना था। ठीक है। लेकिन जब उसने उसे देखा, तो हमें यह कहना होगा कि आत्मा ने उसे कब देखा।

और आत्मा लड़के के अंदर है। ठीक है। और फिर वह उसे ऐंठन में फेंक देता है।

वह अपने पिता से फिर पूछता है कि क्या वह यीशु है, जो ध्यान का केंद्र है, और हमें यीशु, यीशु, यीशु कहने की ज़रूरत नहीं है। हम जानते हैं कि वह केंद्र है। वह पाठ में मुख्य व्यक्ति है।

इसलिए, यीशु ने पिता से पूछा कि यह कब से हो रहा है। और उसने कहा, बचपन, वगैरह। फिर उसने कहा कि अगर तुम कुछ कर सकते हो, तो हम पर दया करो और हमारी मदद करो। और यीशु ने उससे कहा, अगर तुम कर सकते हो, तो जो विश्वास करता है उसके लिए सब कुछ संभव है।

अब, यह विशेष संस्करण एक प्रश्न चिह्न लगाता है। अन्य संस्करणों में एक अवधि लगाई जाती है। यदि आप कर सकते हैं, तो अवधि लगाएं।

एनएलटी कहता है, अगर आप ऐसा कर सकते हैं तो आपका क्या मतलब है? क्या यीशु उस आदमी को डांट रहे हैं? श्लोक 19 पढ़ें। हे अविश्वासी पीढ़ी, विश्वास की कमी, संदेह, विश्वास करने से इनकार करना इस मार्ग का विषय है। तो, हमें सोचना होगा, वह विषय क्या है? मार्ग में, फिर से, हमें पूरे संदर्भ और पूरी स्थिति को देखना होगा।

क्या वह व्यक्ति डांटा हुआ महसूस करता है? इसमें एक तत्व है, जहाँ वह कहता है, मैं विश्वास करता हूँ, लेकिन मेरे अपने विश्वास की सहायता करो। फिर से, शब्द विश्वास सीधे श्लोक 19 से जुड़ता है। हे अविश्वासी पीढ़ी।

मैं विश्वास करना चाहता हूँ। मुझे सच में खेद है कि मैंने ऐसा कहा। कृपया मुझ पर दया करें।

यदि आप कर सकते हैं, यदि यह वास्तव में एक प्रश्न है, तो यह एक आलंकारिक प्रश्न है, जानकारी के लिए नहीं, बल्कि आलंकारिक प्रभाव के लिए, प्रभाव के लिए पूछा गया है। और फिर यीशु कहते हैं, जो विश्वास करता है उसके लिए सब कुछ संभव है। तो फिर, विश्वास और आस्था सभी इसी से हैं।

इसलिए, हमें खुद से पूछना होगा कि अगर यह वास्तव में एक अलंकारिक प्रश्न है, तो हम इस दूसरी भाषा में उस अलंकारिक प्रश्न को कैसे संप्रेषित कर सकते हैं? और हमारे पास कुछ संस्करणों से साक्ष्य हैं जो हमें वह अंतर्दृष्टि प्रदान करेंगे। लेकिन हम जो करते हैं वह यह है कि हम इसे एक वातावरण के रूप में संप्रेषित करने का सबसे अच्छा तरीका देखते हैं। वह वास्तव में उस आदमी पर चिल्लाता नहीं है, लेकिन वह किसी तरह बाहर आता है, और वह आदमी माफ़ी मांगता है।

इसका सीधा सा मतलब है, अगर मैं नहीं कर सकता तो आपका क्या मतलब है? और कुछ हद तक सौम्य या तटस्थ बयान में, उस आदमी ने माफ़ी क्यों मांगी? उसने माफ़ी मांगी क्योंकि उसे

ऐसा कहा जाता था। यह सब ग्रीक में साहित्य, संदर्भों और अलंकारिक उपकरणों से संबंधित है, जो वास्तव में अरामी भाषा का प्रतिबिंब है जो यीशु ने इन अन्य लोगों से बात की थी। इसलिए, यह सब व्याख्या को एक जटिल कार्य बनाता है।

लेकिन हम मूल तक पहुंचने के लिए अपना सर्वश्रेष्ठ प्रयास करते हैं, प्रश्न पूछना शुरू करते हैं और यह समझते हैं कि कोई समस्या है, फिर हम शोध करते हैं और फिर एक अच्छी व्याख्या करते हैं, जिससे अनुवाद की संभावना खुलती है जो पहले हमारे पास नहीं थी।

यह डॉ. जॉर्ज पेटन और बाइबल अनुवाद पर उनकी शिक्षा है। यह सत्र 17 है, अनुवाद चरणों की समीक्षा।